छान्दोग्योपनिषद् तथा राधास्वामी मत में निहित जीवनदर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

थियोलॉजी विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु शोध प्रबंध की

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

ज्योति अम्बष्ट

निर्देशिका

डॉ निशीथ गौड़
संस्कृत विभाग, कला संकाय

संस्कृत विभाग, कला संकाय

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा-282005

2023

प्रस्तावना

वर्तमान समय में भौतिकवादिता की अनन्त अन्ध दौड़ में जिस प्रकार नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन दर्शन का अभाव हो गया है उसके गम्भीर परिणाम देखने को मिल रहे हैं। आज का जीवन दर्शन पूर्ण एवं विस्तृत हैं, पर एक अच्छे मनुष्य के निर्माण में सक्षम नहीं हो पा रही है। उपनिषदों का दर्शन व्यक्ति विशेष का दर्शन न होकर वेदों का विश्लेषणात्मक अध्ययन है। जीवन की महत्ता तथा चरित्र की श्रेष्ठता को बनाए रखना, सत्य, प्रेम, दया, ईमानदारी आदि नैतिक मूल्यों को उपनिषदों में मनुष्य के लिए आवश्यक बताया गया है।

उपनिषदों के वचन मानव को श्रेष्ठ मानव बनाने में सक्षम हैं।सभी उपनिषदों में छांदोग्योपनिषद् का प्रमुख स्थान है। यह सबसे पुराने उपनिषदों में से एक है।यह सामवेद का आधिकारिक उपनिषद् है। इसकी सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है जीव और ब्रह्म की एकता। इसमें श्वेतकेतु को उनके पिता के द्वारा आत्मज्ञान को गहराई से समझाया गया है एवं 'तत्त्वमसि' का उपदेश देते हुए पिता उद्दालक ने ब्रह्मज्ञान की शिक्षा दी है ।

इसमें ज्ञान और उपासना का सुन्दर समन्वय दर्शाते हुए इसको आठ अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रारंभिक पाँच अध्यायों में उपासना का वर्णन है एवं अंतिम तीन अध्यायों में ब्रह्मज्ञान का वर्णन मिलता है।

'तत्त्वमसि' भारतीय दर्शन के इतिहास में दिया गया युगान्तकारी बयान है। इस परम ज्ञान को छान्दोग्य उपनिषद् में पिता उद्दालक द्वारा पुत्र श्वेतकेतु को दिया गया है ।

छठवें अध्याय में पिता उद्दालक अपने पुत्र श्वेतकेतु से पूछते हैं कि

"येनाश्रुतं श्रुतं भवत्यमतं मतविज्ञातं विज्ञातमिति।"

- छान्दोग्योपनिषद् (6/1/3)

पुत्र श्वेतकेतु का नकारात्मक प्रत्युत्तर पाकर पिता उद्दालक उसे ब्रह्म ज्ञान की शिक्षा प्रयोगात्मक रूप से देते हैं और कहते हैं- 'तत्त्वमसि'

इस उपदेश को समझाने के लिये वे अपने पुत्र से तीन दृष्टान्तों का वर्णन करते है-

1. जिस प्रकार मृत्पिण्ड के ज्ञान से मृत्तिका से निर्मित सभी वस्तुओं (घड़ा,मटका) का

2. स्वर्णपिण्ड के ज्ञान से स्वर्ण निर्मित समस्त वस्तुओं (कंगन,कुंडल,हार) का तथा

3. लौह पिण्ड के ज्ञान से लौह निर्मित सभी वस्तुओं (कील,कुलहारी) का ज्ञान हो जाता है। उसी प्रकार ब्रह्म ही एकमात्र सत्ता है वही जगत् का मूल कारण भी है।

छान्दोग्योपनिषद् के षष्ठ अध्याय में आरूणि अपने कथन की पुष्टि व स्पष्टीकरण के लिये शकुनि, मधु मृत्तिका, नदी तथा वृक्ष आदि का दृष्टान्त प्रस्तुत करते है। जैसे

1. छा० उप० षष्ठ अध्याय- दशम खण्ड-नदी के दृष्टान्त द्वारा उपदेश

छान्दोग्योपनिषद् के षष्ठ अध्याय के दशम खण्ड में वर्णित हैं

इमाः सोम्य नद्यः पुरस्तात्याच्यः स्यन्दन्ते
पश्चत्प्रतीच्यस्ताः समुद्रात्समुद्रमेवपियन्ति स समुद्र
एव भवति त तथा तत्र न विदुरियमहमस्मीवमहमस्मीति

(छा० उप० 6/10/1)

अर्थात हे सोम्य। ये नदियाँ पूर्ववाहिनी होकर पूर्व की ओर बहती हैं तथा पश्चिमवाहिनी होकर पश्चिम को बहती है। वे समुद्र में मिलकर फिर समुद्र में ही मिल जाती हैं और समुद्र ही हो जाती है। ये सब किस प्रकार समुद्र में यह नहीं जानती कि मै यह हूँ, यह मैं हूँ। या मैं गंगा हूँ या मैं यमुना हूँ।

वे समझाते हैं कि ठीक इसी प्रकार से हे सोम्य ये सम्पूर्ण प्रजाये सत् से आने पर यह नहीं जानती कि हम सत् के पास से आयी है। इस लोक के सभी जीव-जन्तु जो जो है वे फिर एक हो जाते हैं। वह जो यह चेतना है यह ही सब है। यही सत्य है। वहीं आत्मा है। हे श्वेतकेतु वही तुम हो।

'तत्त्वमसि' 6/10/3

2. छा० उप० षष्ठ अध्याय एकादश खण्ड- वृक्ष के दृष्टान्त द्वारा उपदेश

छान्दोग्य उपनिषद के षष्ठ अध्याय के एकादश खण्ड में भी वृक्ष का दृष्टान्त इस प्रकार वर्णित है

"अस्य सोम्य महतो वृक्षस्य यो मूलेऽभ्याहन्या
जीवस्त्रवेद्य एष जीवनात्मनानुत्रभूतः"
पेपीयमानो मोदमानस्तिष्ठति।।

(छा० उप० 5/11/1)

अर्थात् हे सोम्य! यदि कोई इस महान वृक्ष के मूल में आघात करे तो यह जीवित रहते हुये केवल रसास्वादन करेगा और यदि इसके अग्रभाग में आघात करें तो यह जीवित रहते हुये ही रसास्वादन करेगा। यदि मध्य में आघात करे तो भी यह जीवित रहते हुये केवल रसास्वादन करेगा।

यह वृक्ष जीव आत्मा । चेतना से ओत प्रोत है और जलपान करता हुआ आनन्द स्थित है।
इस दृष्टान्त से यह निश्चय होता है कि स्थावर चेतनायुक्त होते है और इससे यह प्रदर्शित होते है कि वृक्ष यदि अति शुष्क हो जाये तो यह चेतनाशून्य हो जायेगा।

वे फिर समझाते हैं कि हे सोम्य। ठीक इसी प्रकार तू जान कि जीव / चेतना से रहित होने पर यह शरीर मर जाता है. जीव/ चेतना / आत्मा नहीं मरती। जो यह अणिमा है वही सब कुछ है, यही सत्य है। यही आत्मा है और है श्वेतकेतु वही तू है ।

'तत्त्वमसि'

(छा० उप० 6/11/3)

छान्दोग्योपनिषद् में पाठ्यक्रम के दो भाग हैं

1. अपरा विद्या (सांसारिक ज्ञान) 2 पराविद्या (परमात्मा का ज्ञान)

अपरा विद्या में वेद, वेदांग, गणित, तर्कशास्त्र, नीति शास्त्र, देवविद्या, ब्रह्म विद्या, भूत विद्या नक्षत्र विद्या, सर्प विद्या, नृत्य, संगीत व कल्प आदि है। जबकि परा विद्या को मुण्डक उपनिषद में इस प्रकार परिभाषित किया गया है

"अथ परा मया तदक्षरम विगम्यते"

(मुण्डकोपनिषद्)

अतः परा विद्या वह विद्या है जिससे ब्रहम का ज्ञान होता है।

राधास्वामी मत वैज्ञानिकता और आधुनिकता से परिपूर्ण मत है। यह मत सत्संग, सेवा, सुमिरन, ध्यान पर विशेष बल देता है। इस मत के तीसरे आचार्य परमगुरु महाराज साहब ने धर्म का वैज्ञानिक वर्णन आज से 100 वर्ष पूर्व ही अपनी पुस्तक 'डिस्कोर्सेस ऑन राधास्वामी फेथ' में कर दिया था ।

राधास्वामी मत कृषि पारिस्थितिकी तंत्र अपने अनुयायियों का एक एकीकृत जीवन दर्शन है, जो प्रकृति के साथ एकीकृत है, जहाँ हर कोई समुदाय के लिए काम कर रहा है, लाभ के लिए नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक गुरु की उपस्थिति में, आध्यात्मिक रूप से प्रसारित वातावरण में निःस्वार्थ सेवा या निष्काम सेवा कर रहा है। यहाँ एक इको-विलेज, एक हेल्थकेयर हैबिटेट और एक दयालु उद्यान, अद्वितीय और अनुकरण के योग्य है।

राधास्वामी मत का जीवन दर्शन, बेहतरीन सांसारिकता, निःस्वार्थ सेवा, ईश्वर का पितृत्व और मनुष्यमात्र का भ्रातृत्व.. आध्यात्मिक अभिजात वर्ग, सभी राधास्वामी मत में परिलक्षित होते हैं।

इस मत के पाँचवें आचार्य परम गुरु साहब जी महाराज ने कहा था-

"हम एक ऐसे समुदाय को अस्तित्व में लाना चाहते हैं, जिसका प्रत्येक सदस्य अपने कर्तव्य को जाने और अपना कर्तव्य निभाए। हम एक ऐसी संरचना का निर्माण करने का प्रस्ताव करते हैं जो पुरुषों और महिलाओं को अपनी विशाल छत के नीचे आश्रय देगी, जो समर्पण का जीवन जीने के लिए ईश्वर और मनुष्य मात्र की सेवा करने का जीवन जीने के इच्छुक हैं। हम ऐसी संस्थाओं का निर्माण करना चाहते हैं जो राधास्वामी सत्संग के नाम का सम्मान करें और मानवता के उत्थान के लिए काम करने वाले सभी लोगों के लिए एक मॉडल के रूप में काम करें। "

(परम गुरु हुजूर साहबजी महाराज के दर्शन)

उत्कृष्ट जीवन दर्शन किसी भी राष्ट्र के विकास का प्रमुख आधार है। आज वैज्ञानिक प्रगति एवं तीव्र औद्योगिक विकास ने विश्व परिदृश्य में नवीन आयामों की स्थापना की है। नवीन अनुसंधानों के परिणाम स्वरूप मानव जीवन निरन्तर भौतिक वादिता की ओर अग्रसर होता गया। जहाँ एक ओर मानव जीवन सरल हो गया वहीं साधन सम्पन्न एवं निर्धन के मध्य असमानता की एक विशाल खाई भी बनती चली गई। जीवन शैली को संकुचित करते हुए हमने जीवन दर्शन को मात्र धन प्राप्ति का साधन मान लिया। जीवन दर्शन की आत्मा उसकी नैतिकता एवं आध्यात्मिकता में निहित है। नैतिकता एवं आध्यात्मिकता के अभाव में मनुष्य का जीवन संवेदनहीन धन प्राप्ति की मशीन बनकर रह गया। व्यक्ति छोटी-छोटी असफलता में अमूल्य जीवन को हारने लगा है। जहाँ युवाओं को ऊर्जा एवं उत्साह से भरपूर होना चाहिए । वहीं वह निराशा एवं विषाद के अनन्त महासागर में डूबता जा रहा है।

उपनिषदों में निहित नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन दर्शन को वर्तमान जीवन दर्शन में समुचित स्थान देकर हम एक स्वस्थ जीवन के साथ स्वस्थ समाज की स्थापना कर सकते हैं। नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन दर्शन व्यक्ति के अर्थपूर्ण जीवन (Meaningful life), जीवन में संतुष्टि (satisfaction with life), जीवन में सफलता (success in life) जीवन में आनन्द (Happiness in life), मानवीय सम्बन्धों की समझ (Understanding human relationships) के लिए अत्यावश्यक है। प्रत्येक मानव के लिए यह अनिवार्य है कि वह समाज का सक्रिय सदस्य बनने के लिए निर्धारित मानवीय मूल्यों को स्वीकार करे नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन शैली व्यक्ति विशेष परिवार, समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण मानवता को सभ्य एवं शान्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। इसलिए यह विषय अध्ययन की गम्भीरता को देखते हुए शोध की दृष्टि में अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा।

शोध प्रविधिः-

शोध अध्ययन विधि- प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक विधि एवं तुलनात्मक विधियों का प्रयोग किया जायेगा। प्रस्तुत शोध की प्रकृति गुणात्मक है। प्रस्तुत शोध के लिए तुलनात्मक अध्ययन के रूप में प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन के स्रोतः-

प्रस्तुत अध्ययन में प्राचीन एवं वर्तमान साक्ष्यों, साधनों, लेखों का चयन कर तथा चयनित उपनिषद् और राधास्वामी मत की चयनित पुस्तकों की अन्तर्वस्तु का विश्लेषण जीवन दर्शन के सन्दर्भ में किया जायेगा। मूलतः आधार ग्रन्थ के रूप में सारबचन नसर, यथार्थ प्रकाश और सार उपदेश, राधास्वामी सतसंग सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें और गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित छान्दोग्योपनिषद् को अध्ययन के लिए प्रयुक्त किया जाएगा।

सम्बंधित शोध-प्रबन्धों का सर्वेक्षणः-

दूबे, महेन्द्र कुमार उपनिषद् शिक्षा एवं टैगोर शिक्षा दर्शन का वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में एक तुलनात्मक अध्ययन" शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, पूर्वांचल विश्वविद्यालय (2009) |

कुलहरी, नीतू 'उपनिषदीय शिक्षा प्रणाली की वर्तमान शैक्षिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उपादेयता - एक समीक्षात्मक अध्ययन' शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबडेवालविश्वविद्यालय, झुन्झुनूं, राजस्थान (2015)

शोध अध्ययन के उद्देश्य:-

1 उपनिषदों में निहित नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन दर्शन का अध्ययन करना।

2 राधास्वामी मत के जीवनदर्शन में नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन दर्शन के महत्त्व को जानना।

3 जीवन के विभिन्न आयामों में नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन दर्शन के महत्त्व का अध्ययन करना।

4 उपनिषदों में निहित अन्तर्दृष्टि के विकास की प्रक्रिया एवं उसकी, राधास्वामी मत के जीवनदर्शन में उपादेयता का अध्ययन करना।

अवधारणाएँ

1 उपनिषदों में निहित नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन दर्शन आधुनिक जीवन दर्शन के लिए उपयोगी होगी।

2 राधास्वामी मत के जीवनदर्शन में नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का विशेष महत्त्व है।

3 चरित्र निर्माण में उपनिषदों की जीवन दर्शन उपयोगी सिद्ध होती है।

4 जीवन दर्शन के विभिन्न आयामों में नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा का विशेष महत्त्व है।

5 उपनिषदों में निहित अन्तर्दृष्टि के विकास की प्रक्रिया राधास्वामी मत के जीवनदर्शन में आवश्यक प्रतीत होती है।

शोध अध्ययन की सार्थकता एवं उपादेयता

स्वामी विवेकानन्द ने अपने प्रवचन में कहा था- "मैं उपनिषद् को पढ़ता हूँ, तो मेरे आँसू बहने लगते हैं। यह कितना महान ज्ञान है? हमारे लिए यह आवश्यक हैं कि उपनिषदों में सन्निहित तेजस्विता को अपने जीवन में विशेष रूप से धारण करें। स्वामी विवेकानन्द ने उपनिषद्-

ज्ञान की आवश्यकता को न केवल ब्रह्म प्राप्ति के लिए ही, अपितु दैनिक जीवन के लिए भी उपयोगी बतलाया है। विश्वकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर, डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, सन्त विनोबा भावे, अरब विद्वान अलबरूनी, मुगल सम्राट शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह जर्मन दार्शनिक श्री अर्थर शोपेन हॉवर, मैक्समूलर आदि अन्य विद्वानों ने उपनिषदों को सम्पूर्ण संसार के लिए ज्ञान की अमूल्य निधि माना है और मानव जीवन के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना है।

प्रस्तुत शोध में शिक्षा में नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन दर्शन के महत्त्व को रेखांकित किया जा रहा है, जो वर्तमान

जीवन दर्शन में इसकी आवश्यकता के लिए उपयोगी होगा। मानव के बहिर्दृष्टि के साथ अन्तर्दृष्टि के विकास की प्रक्रिया को स्पष्ट किया जाएगा सम्भवतः वैज्ञानिक अनुसंधान के फलस्वरूप हो रहे नित नये मशीनों के अविष्कार के साथ-साथ प्रतिस्पर्धात्मक रूप से मनुष्यत्व की भी खोज की जा सके।

अतः कहा जा सकता है कि प्रस्तुत शोध अध्ययन "छान्दोग्योपनिषद् और राधास्वामीमत में निहित जीवन-दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन" वर्तमान समय में निश्चित रूप से उपयोगी एवं सार्थक होगा।

प्रथम अध्याय- छान्दोग्योपनिषद् और राधास्वामी मत का सामान्य परिचय

क) उपनिषद् साहित्य में छान्दोग्योपनिषद का स्वरूप

ख) संत मत-राधास्वामी मत का सामान्य परिचय

द्वितीय अध्याय- जीवन-दर्शन का अर्थ एवं मानक आधार

क) जीवन-दर्शन एवं पुरुषार्थ-चतुष्ट्य

ख) धर्म एवं अध्यात्म

ग) संस्कृति एवं जीवन दर्शन

घ) व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य में जीवनदर्शन - ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक

तृतीय अध्याय- छान्दोग्योपनिषद् में प्रतिपादित जीवन-दर्शन

क) छान्दोग्योपनिषद् में पुरुषार्थ-चतुष्ट्य की अवधारणा

ख) छान्दोग्योपनिषद् में धर्म और अध्यात्म

ग) भारतीय संस्कृति के विविध पक्ष

घ) छान्दोग्योपनिषद् की व्यावहारिकता

चतुर्थ अध्याय- राधास्वामी मत में प्रतिपादित जीवन दर्शन

क) राधास्वामी मत में पुरुषार्थ-चतुष्ट्य की अवधारणा

ख) राधास्वामी मत में धर्म एवं अध्यात्म

ग) भारतीय संस्कृति के विविध पक्ष

घ) राधास्वामी मत की व्यावहारिकता

पञ्चम् अध्याय- जीवन दर्शन के मानक आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष एवं वर्तमान समय में प्रासंगिकता

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. वेदवती वैदिक, उपनिषद्-वाङ्मय, नाग-प्रकाशक दिल्ली-7,1997

2. उपनिषद् परिशीलन, डॉ. शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी, राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र जयपुर, 2005

3. छान्दोग्योपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्य) गीता प्रेस गोरखपुर

4. डॉ. वत्स - कबीर और अखों का जीवन दर्शन, हिन्दी साहित्य प्रचार समिति आगरा 282005

5. कल्याण उपनिषद्-अङ्क, तेईसवें वर्ष का विशेषाङ्क, कल्याण-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर

6. सार उपदेश,सर साहबजी महाराज,राधास्वामी सत्संग सभा,दयालबाग ,आगरा

7. व्हाइट पेपर ऑन रिलिजन एंड राधास्वामी फेथ, राधास्वामी सत्संग सभा प्रकाशन

8. यथार्थ प्रकाश भाग -1 और 2, साहबजी महाराज, राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग, आगरा 2008 , संस्करण 2011

9. पीजीडीटी नोट्स, दयालबाग शैक्षिक संस्थान दयालबाग प्रेस दयालबागआगरा

10. छान्दोग्योपनिषद, स्वामी विमलानंद, सेंट्रल चिन्मय मैसियन ट्रस्ट, मुंबई द्वारा 'तत्वमसि'।

11. साहबजी महाराज, "राइटिंग एंड स्पीच" राधास्वामी सत्संग सभा दयालबाग, आगरा - 1964

12. साहबजी महाराज, यथार्थ प्रकाश, भाग- II, राधास्वामी सत्संग सभा दयालबाग, आगरा – 1957

13. सत्संगी पी एस, हैमरॉफ़, एस, "कॉन्शसनेस इंटिग्रेटिंग इस्टर्न एंड वेस्टर्न परस्पेकटिव" 2016

14. Spiritual consciousness, P. Shriramamurti, Prem Prashant, Anand Mohan, First edition 2013

15. काणे. डॉ. पाण्डुरंग वामन, धर्मशास्त्र का इतिहास हिन्दी अनुवादक अर्जुन चौबे काश्यप, हिन्दी समिति सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ (2004)

16. द्विवेदी, डॉ. कपिल देव, वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी (2004)

17. मिश्र, उमेश, भारतीय दर्शन प्रकाशन ब्यूरो, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ (1957)